Durga Temple
(A Tax-Exempt Organization)
8400 Durga Place
Fairfax Station, VA 22039
(703) 690-9355

Hanuman Chalissa Hindi & English

Please do not remove
Property of
Durga Temple

Price $5.00

Durga Temple
(A Tax-Exempt Organization)
8400 Durga Place
Fairfax Station, VA 22039
(703) 690-9355

श्रीहनुमानचालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥

राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरीनंदन।
तेज प्रताप महा जग बंदन॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लषन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लषन जियाये।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।

कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना।
लंकेस्वर भए सब जग जाना॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रच्छक काहू को डर ना॥
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै॥
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोइ लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै॥
चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अंत काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा।

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥
जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा।
होय सिद्धि, साखी गौरीसा॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप॥

॥ इति ॥

Durga Temple

(A Tax-Exempt Organization)
8400 Durga Place
Fairfax Station, VA 22039
(703) 690-9355

संकटमोचन अष्टक

बाल समय रवि भक्ष लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥१॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महामुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो ॥को०-२॥

अंगद के संग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सों जु बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो ॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया सुधि प्रान उबारो ॥को०-३॥

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो ॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ॥को०-४॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ॥
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो ॥को०-५॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो ॥को०-६॥

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत संहारो ॥को०-७॥

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ॥को०-८॥

दो०—लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

Durga Temple
(A Tax-Exempt Organization)
8400 Durga Place
Fairfax Station, VA 22039
(703) 690-9355

श्री बजरंग बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करै सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जन के काज बिलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै॥
जैसे कूदि सिन्धु के पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥
आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुरलोका॥
जाय विभीषन को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा। अति आतुर जम कारे तोरा॥
अक्षय कुमार मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर नभ भई॥
अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तरजामी॥
जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर ह्वे दुख करहु निपाता॥
जय हनुमान जयति सुखसागर। सुर समूह समरथ बलनागर॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहिं मारु बज्र की कीलें॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो॥
ओंकार हुँकार प्रभु धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमान कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥
सत्य होहु हरि सपथ पाय के। रामदूत धरु मारु धाय के॥
जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहि जानत कछु दास तुम्हारा॥
वन उपवन मग, गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥
पाँय परौं कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
जय अञ्जनिकुमार बलवन्ता। संकर सुवन बीर हनुमन्ता॥

बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक ॥
भूत प्रेत पिसाच निसाचर। अगिन बैताल काल मारी मर ॥
इन्हें मारु तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की ॥
जनकसुता हरिदास कहावौ। ताकी सपथ विलंब न लावौ ॥
जय जय जय धुनि होत अकासा। सुमिरत होत दुसह दुख नासा ॥
शरण शरण कर जोरि मनावौं। यहि औसर अब केहि गोहरावौं ॥
उठु उठु चंनु तोहि राम दोहाई। पांय परौं कर जोरि मनाई ॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥
ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खलदल ॥
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय आनन्द हमारो ॥
यह बजरंग बाण जेहि मारे। ताहि कहोए फिर कौन उबारे ॥
पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करें प्राण की ॥
यह बजरंग बाण जो जापैं। तातें भूत प्रेत सब कापैं ॥
धूप देय अरु जपै हमेसा। ताके तन नहि रहै कलेसा ॥

दोहा—प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करें हनुमान ॥

Durga Temple
(A Tax-Exempt Organization)
8400 Durga Place
Fairfax Station, VA 22039
(703) 690-9355

दैनिक-प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ॥
मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ।
अर्पण कर दूं दुनियां भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥
जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हों, गोपाल तुम्हारे हाथों में ॥
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं ।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ॥
जब-जब संसार का कैदी बनूं निष्काम भाव से कर्म करूं ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं निराकार / साकार तुम्हारे हाथों में ॥
मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥

Durga Temple
(A Tax-Exempt Organization)
8400 Durga Place
Fairfax Station, VA 22039
(703) 690-9355

श्रीराम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं॥
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं॥
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल गंजनं॥
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

सो. — जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

दोहा—मो सम दीन न दीन हित, तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस मनि, हरहु विषम भव भीर॥

Durga Temple

(A Tax-Exempt Organization)
8400 Durga Place
Fairfax Station, VA 22039
(703) 690-9355

श्री अम्बाजी

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।।
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको।।
कनक समान, कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योती।।
शुंभ निशुंभ बिदारे, महिसासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिवपटरानी।।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृंदगा, अरु बाजत डमरूँ।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुखहर्ता, सुख सम्पति करता।।
भुजा अष्ट अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांच्छित फल पावत, सेवत नर नारी।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
(श्री) मालकेतु में राजत, कोटिरतन ज्योती।।
(श्री) अम्बे जी की आरति, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावे।।

Durga Temple
(A Tax-Exempt Organization)
8400 Durga Place
Fairfax Station, VA 22039
(703) 690-9355

श्री हनुमान जी

आरती कीजै हनुमानलला की, दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी।
जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झांके॥
अंजनिपुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका-सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे, सीतारामजी के काज सँवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरनि पर, आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पाताल तोरि जम-कारे, अहिरावन की भुजा उखारे॥
बायें भुजा असुरदल मारे, दहिने भुजा सन्तजन तारे।
सुर-नर-मुनि आरती उतारें, जय-जय-जय हनुमान उचारें॥
कंचन थाल कपूर लौ छाई, आरती करत अंजना माई।
जो हनुमानजी की आरती गावै, बसि बैकुण्ठ परम पद पावै॥

१.

कर्पूर गौरं करुणावतारं
संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानी सहितं नमामी ॥

2.

नीलाम्बुज श्यामल कोमलाङ्गं
सीतासमारो पित वाम भागम् ।
पाणौ महासायक चारु चापं
नमामि रामं रघुवंश नाथम् ॥

3.

वंशी विभूषित करान्नव नीर दाभात्
पीताम्बरा दरुण विम्ब फलाधरोष्ठात्
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादरविन्द नेत्रात्
कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥

४-

अतुलित बल धामं
हेम शैलाभ देहं
दनुज वन कृशानुं
ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल गुण निधानम्
वानराणामधीशं
रघुपति प्रिय भक्तं
वातजातं नमामि ॥

५

सर्व मंगल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥

६

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव-देव: ॥

७

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा,
बुद्ध्यात्मना वानुसृत स्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै,
नारायणायेति समर्पयामि ॥